पाठ-9 : जो देखकर भी नहीं देखते (हेलेन केलर)

शब्दार्थ:

1. खास- विशेष
2. अचरज- हैरानी
3. आदी- आदत होना
4. रोचक- मनोरंजक
5. मधुर- मीठा
6. स्वर- आवाज़
7. आस- आशा
8. मचल उठना- उत्सुक होना
9. खुशनसीब- अच्छी किस्मत वाला
10. मखमली- मखमल के समान कोमल

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र.1 'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते है' हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर- हेलेन केलर की एक सहेली जब जंगल की सैर करके वापिस आई तो हेलेन केलर ने उससे पूछा कि "तुमने जंगल में क्या-क्या देखा?" हेलेन उसका उत्तर सुनकर हैरान रह गई, जब उसने कहा कि उसे जंगल में कुछ भी ख़ास नज़र नहीं आया।

प्र.2 'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर- प्रकृति बहुत - सी चीज़ों का खज़ाना है। भोजपत्र के पेड़ की चिकनी छाल, चीड़ की खुरदरी छाल, वसंत में कोमल कलियों का खिलना, फूलों की खुशबू आदि प्रकृति का जादू है।

प्र.3 "कुछ ख़ास तो नहीं"। हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों नहीं हुआ?

उत्तर- जब हेलेन की सहेली ने कहा कि उसने जंगल में कुछ ख़ास नहीं देखा तो हेलेन को यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि ऐसे उत्तर सुनने की उसे आदत पड़ गई है। उसे लगता है कि लोग आँखें होते हुए भी बहुत कम देखते हैं।

प्र.4 हेलेन केलर प्रकृति की किन चीज़ों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थी? पाठ के आधार पर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर- हेलेन केलर भोजपत्र के पेड़ की चिकनी छाल, चीड़ की खुरदरी छाल, फूलों की कोमल और मखमली सतह को छू कर तथा चिड़िया के मधुर स्वर को सुनकर पहचान लेती थी।

प्र.5 जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है- तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ है?

उत्तर- दृष्टि भगवान की देन है। यह हमारे जीवन को खुशियों से भर देती है। इसकी सहायता से हम अपने आस-पास के सुंदर नज़ारों को देख सकते हैं।

पाठ-10 : संसार पुस्तक है (जवाहरलाल नेहरु)

शब्दार्थ :

1. जानवर- पशु
2. ख्याल- विचार
3. बेहद- बहुत अधिक
4. असली- वास्तविक
5. जबान-भाषा
6. दामन- तलहटी
7. नोकीला-नोकदार
8. पेंदा- तल
9. दरिया- समुद्र
10. ज़र्रा= कण

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र.1 लेखक ने 'प्रकृति के अक्षर' किन्हें कहा है?

उत्तर- लेखिका ने चट्टान के टुकड़ों, वृक्षों, पहाड़ों आदि को प्रकृति के अक्षर कहा है।

प्र.2 लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?

उत्तर- लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती बहुत गरम थी और उस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी।

प्र.3 दुनिया का पुराना हाल किन चीज़ों से जाना जाता है? कुछ चीज़ों के नाम लिखो।

उत्तर- पहाड़ों, समुद्रों, नदियों, जंगलों, जानवरों की पुरानी हड्डियों से दुनिया का पुराना हाल जान सकते हैं।

प्र.4 गोल चमकीला रोड़ा अपनी क्या कहानी बताता है?
उत्तर- चमकीला रोड़ा बताता है कि वह पहले चट्टान के रुप में था। चट्टान के टूटने पर शिला बन गया। शिला के टूटने पर वह और भी छोटा हो गया। पहले वह खुरदरा और नोकीला था, फिर पानी बहा कर उसे पहले घाटी, फिर दरिया में ले आया, घिस-घिस कर वह चमकीला और गोल हो गया।

प्र.5 गोल, चमकीले रोड़े को यदि दरिया और आगे ले जाता तो वह क्या होता? विस्तार से उत्तर लिखो।
उत्तर- यदि दरिया रोड़े को और आगे ले जाता तो वह छोटा होता-होता कण बन जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता।

प्र.6 नेहरु जी ने इस बात का हल्का सा संकेत दिया है कि दुनिया कैसे शुरु हुई होगी। उन्होंने क्या बताया है? पाठ के आधार पर लिखो।
उत्तर- नेहरु जी ने बताया कि धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है। पहले यह धरती बहुत गरम थी और इस पर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। आदमियों से भी पहले इस पर जानवर रहते थे।

पाठ-11 मैं सबसे छोटी होऊँ (सुमित्रानंदन पंत)

शब्दार्थ:

1. अंचल- वस्त्र का किनारा
2. फिरती- घूमती
3. सुखद- सुख देने वाली
4. मात- माता
5. गात- शरीर
6. सदा- हमेशा
7. थमा- देकर
8. छलती है- धोखा देती है
9. सज्जित करना- सजाना
10. चंद्रोदय- चाँद का निकलना

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र.1 कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है?
उत्तर- छोटे बच्चे को माँ अधिक प्यार करती है तथा उसका अधिक ध्यान रखती है। इसलिए कविता में छोटे होने की कल्पना की गई है।

प्र.2 कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है? क्या तुम भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करोगे?
उत्तर- कविता में सदा माँ के आँचल की छाया में बने रहने की कल्पना की गई है। बड़ी होकर छोटी बच्ची अपनी माँ का प्यार नहीं खोना चाहती। हाँ, मैं हमेशा छोटी रहना चाहती हूँ।

प्र.3 आशय स्पष्ट करो-

हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात!

उत्तर- कविता में छोटी बच्ची सदा छोटी रहना चाहती है। बड़े होने पर वह दिन-रात माँ का हाथ पकड़कर घूम नहीं सकती।

प्र.4 अपने छुटपन में बच्चे अपनी माँ के करीब होते हैं।इस कविता में नज़दीकी की कौन-कौन सी स्थितियाँ बताई गई हैं?
उत्तर-
1. माँ की गोदी में सोना।
2. माँ के हाथ से भोजन खाना।
3. कहानियाँ सुनना।
4. माँ के हाथों से नहाना धोना।

पाठ-12 लोक गीत (भगवतशरण उपाध्याय)

शब्दार्थ-

1. लोच - लचीलापन
2. साधना - विशेष प्रयास
3. करताल - तालियाँ
4. हेय - हीन
5. कोरी - नई
6. उपेक्षा - ध्यान न देना
7. मर्म को छूना - मन को छूना
8. पुट - अंश
9. ओजस्वी - जोश वाला
10. आयाम - पक्ष

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र1. निबंध में लोकगीतों के किन पक्षों की चर्चा की गई है? बिंदुओं के रूप में उन्हें लिखो।

उत्तर: 'लोकगीत' निबंध में लोकगीत के निम्नलिखित पक्षों की बात की गई है।

1. लोकगीतों में महिलाओं की भूमिका।
2. लोकगीतों के प्रकार।
3. लोकगीतों की लोकप्रियता।
4. लोकगीतों और शास्त्रीय संगीत में भिन्नता।
5. लोकगीतों की अहमियत।
6. लोकगीतों में समाज की रूपरेखा का चित्र।

प्र2. हमारे यहाँ स्त्रियों के खास गीत कौन-कौन से हैं?

उत्तर: स्त्रियों के सबसे खास लोकगीत निम्नलिखित हैं:

1. विवाह के समय, भिन्न-भिन्न रस्मों में गाये जाने वाले गीत।
2. बच्चे के जन्म पर गाये जाने वाले गीत।
3. स्नान लेने के रास्ते में गाये जाने वाले गीत।
4. नदियों और खेतों पर गाये जाने वाले गीत।
5. घरेलू काम करते समय गाये जाने वाले गीत।
6. नामकरण और अन्य संस्कारों के समय गाये जाने वाले गीत।
7. बिहार का सोहर गीत इत्यादि।

प्र3. निबंध के आधार पर और अपने अनुभव के आधार पर (यदि तुम्हें लोकगीत सुनने के मौके मिले हैं तो) तुम लोकगीतों की कौन-सी विशेषताएँ बता सकते हो?

उत्तर-लोकगीत हमारी सांस्कृतिक पहचान है। इन गीतों में हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कार झलकते हैं। इनकी अनेक विशेषताएँ हैं -

1. लोकगीत गाँव के अनपढ़ पुरुष व औरतों के द्वारा रचे गए हैं।
2. इनके लिए साधना की ज़रूरत नहीं होती।
3. लोकगीतों में लचीलापन और ताज़गी होती है।
4. ये आम जनता के गीत हैं।
5. ये त्योहारों और विशेष अवसरों पर ही गाए जाते हैं।

पाठ- 13 नौकर (अनु बंद्योपाध्याय)

शब्दार्थ:-

1. आमतौर पर - अकसर
2. बैरिस्टरी - वकालत
3. खुद - स्वयं
4. कार्यकर्ता- काम करने वाले
5. हैरत में पड़ना- हैरान होना
6. गर्व - अभिमान
7. हाज़मा- पाचन-शक्ति
8. अकसर - आम तौर पर
9. बेस्वाद - स्वादहीन
10. मदद्गार - सहायक

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र1. आश्रम में कॉलेज के छात्रों से गाँधी जी ने कौन-सा काम करवाया और क्यों?

उत्तर- अंग्रेज़ी झाड़ने वाले छात्रों से गाँधी ने गेहूँ बीनने के लिए कहा। गाँधी जी किसी भी काम को छोटा नहीं मानते थे। आश्रम में गेहूँ पीसने से पहले उसे बीनना होता था। इस काम को कई बार गाँधी जी स्वयं भी करते थे। बातचीत के बाद जब कॉलेज के छात्रों ने गाँधी जी से कहा कि आप हमें कोई कार्य बताएँ। छात्रों के पूछने पर गाँधी जी ने उन्हें गेहूँ बीनने के लिए कह दिया।

प्र2. 'आश्रम में गाँधी कई ऐसे काम भी करते थे, जिन्हें आमतौर पर नौकर-चाकर करते हैं'। पाठ में से तीन ऐसे प्रसंगों को अपने शब्दों में लिखो जो इस बात का प्रमाण हों।

उत्तर- गाँधी जी जिस ज़माने में वकालत से हज़ारों रुपए कमाते थे, उस समय भी वे अपने हाथ से चक्की से आटा पीसा करते थे। इस संबंध में एक और कहानी इस प्रकार है। आश्रम में एक नियम अपने बर्तन स्वयं साफ़ करने का था। गाँधी जी ने एक बार बड़े-बड़े पतीलों को साफ़ करने का काम अपने लिए चुना और पतीलों की पेंदी पर लगी कालिख़ को खूब रगड़-रगड़कर साफ़ किया।

आश्रम का निर्माण हो रहा था। तब अतिथियों को तंबुओं में सोना पड़ता था। एक नवागंतुक को यह पता नहीं था कि बिस्तर कहाँ रखना है। वह यह पूछने के लिए कि बिस्तर कहाँ रखना है, चला गया। जब वह वापस आया तो उसने देखा कि गाँधी जी उसके बिस्तर को उठाकर जा रहे हैं।

प्र3. लंदन में भोज पर बुलाए जाने पर गाँधी जी ने क्या किया?

उत्तर- लंदन में छात्रों ने गाँधी जी को भोज पर बुलाया। छात्रों ने इस अवसर पर स्वयं ही शाकाहारी भोजन बनाने का निश्चय किया। गाँधी जी भी दोपहर को वहाँ पहुँच गए और तश्तरियाँ धोने, सब्ज़ी साफ़ करने और छोटे-मोटे काम करने में छात्रों की सहायता करने लगे।

प्र4. गाँधी जी ने श्रीमती पोलक के बच्चे का दूध कैसे छुड़वाया?

उत्तर- श्रीमती पोलक का बच्चा अपनी माँ को चैन से सोने नहीं देता था। वह रात को भी दूध पीने के लिए अपनी माँ को जगाए रखता था। यह देख गाँधी जी ने बच्चे की देखभाल का ज़िम्मा ले लिया। वे रात को घर देर से पहुँचने पर भी श्रीमती पोलक के बिस्तर से बच्चे को उठाकर अपने बिस्तर पर लिटा लेते थे। उसे पानी पिलाने के लिए एक बर्तन में पानी भरकर भी रख लेते थे। बच्चे को पंद्रह दिन तक उन्होंने अपने साथ बिस्तर पर सुलाया। अपनी माँ से पंद्रह दिन तक अलग सोने के बाद बच्चे ने माँ का दूध छोड़ दिया।

प्र5. आश्रम में काम करने या करवाने का कौन-सा तरीका गाँधी जी अपनाते थे? पाठ के आधार पर लिखो।

उत्तर- गाँधी जी किसी भी काम को करने के लिए किसी को कोई आदेश नहीं देते थे। आश्रम का नियम था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना काम स्वयं करना है। इस नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना काम स्वयं करता था। गाँधी जी भी अपना काम स्वयं करते थे। उनको काम करता देख दूसरे लोग भी उनका अनुकरण करते थे।

पाठ-14 : वन के मार्ग में (तुलसीदास)

शब्दार्थ:

1. पर्णकुटी- पत्तों की कुटिया
2. आतुरता- बेचैनी
3. भाल- माथा
4. छाँह- छाया
5. जानकी- सीता
6. तनु-शरीर
7. बारि- जल
8. नाह- प्रियतम
9. बिलोचन- आँखें
10. पायँ- पाँव

प्रश्नों के उत्तर लिखो :

प्र.1 नगर से बाहर निकलकर दो पग चलने के बाद सीता की क्या दशा हुई?

उत्तर- नगर से बाहर निकलकर दो कदम चलते ही सीता जी बहुत थक गई और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।

प्र.2 'अब और कितनी दूर चलना है, पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे? किसने, किससे कहा और क्यों?

उत्तर- यह प्रश्न सीता जी ने राम जी से पूछा क्योंकि वह विश्राम करना चाहती थीं।

प्र.3 राम ने थकी हुई सीता की क्या सहायता की?
उत्तर- राम जी ने उन्हें बिठाया और उनके पाँव में से काँटे निकालने लगे।

प्र.4 दोनों सवैयों के प्रसंगों में अंतर स्पष्ट करो।
उत्तर- पहले प्रसंग में सीता श्री राम जी से विश्राम करने का निवेदन करती हैं। दूसरे प्रसंग में श्री राम जी उनके पैरों में से काँटे निकालते हैं।

प्र.5 पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में करो।
उत्तर- वन का मार्ग अत्यधिक दुर्गम था। यह रास्ता काँटों, ऊबड़-खाबड़ जगहों व झाड़-झखांड से भरा था। खाने-पीने की वस्तुओं का अभाव था। पीने के पानी का प्रबंध करना भी मुश्किल था। विश्राम स्थल हेतु स्थान खोजना आसान न था।